

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक



५२३९/२३३

ग्रंथ नाम

पं. शंभूंग भजन

विषय

मराठी काव्य.

क्र. १३

मानिक कुत पदे रत्ताचीं

इ. स. १९२३

५९६।५ २३९



मराठी काव्य

(1) गोविंदरविवर

देशा ॥ संकटसर्वहिवारीतो डिभव  
 पाशा ॥ जय ० ॥ ५ ॥ रत्नरवचितमुमु  
 टमस्तकवरिसाजे ॥ करणिकुंडल  
 तेजे पाहो निरविलाजे ॥ जय ० ॥ १ ॥  
 तनुसावजिक विनितां वरपी  
 तां वरपि वरतामा वरक  
 स्तुरिवागी ॥ २ ॥ रत्नांक  
 बहुमाजक विती ॥ गोविंदाग  
 रुडध्वजस्य ॥ सादमबाहती ॥ ज  
 य ० ॥ ३ ॥ पुष्करणितिरवासाशेषा  
 द्विनाथा ॥ अभयकरोनीनिववी  
 दिनमाणिकआता ॥ ज ० ॥ ४ ॥ ॥ ३  
 जयदेवजयदेवजयजयहणुमंता  
 विघ्नदुरदुरपळतीतुजनामधेता



Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Phule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan  
 Digitized by "Srujanika"



(५)

गोपनीयं पुस्तकम्

जय० ॥५॥ रुद्र अकरावातु अस  
सीबलभीमा ॥ अंगिकार करसीदा  
श्यत्वरामा ॥ उपजत ब्रह्मच्यारी ने  
ण सीह्यारामा ॥ पुरुषाथ चिबळे जिं  
कियले कामा ॥ जय० ॥ ॥ विशाळ  
रुपथार रिः ॥ तुटी ॥ दिसती  
शोभास्वामी पु ॥ वमोटी ॥ सव्ये  
हस्त उभारि ॥ रकटि ॥ चरणी  
रगडिसी राक्षस बाबर सोटी ॥ जय  
दे० ॥ २ ॥ बळतेवर्णु नसकेतुजमास्त  
तिराया ॥ वज्र देहि अससी अमर  
चिकाया ॥ पडता संकट स्मरता धी  
वसिल वलाया ॥ ह्मणहु निमाणिक

(3)

गोपीशंकराय नमः

दासलागतसेपाया ॥ ज ० ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥  
जयदेव जयदेव जयखंडेराया श्री  
खंडेराया ॥ आनंदेतुजवरुनिवोवा  
छिनकाया ॥ जय ० ॥ ५ ॥ कामक्रोध  
मणिमलुप्रनं ॥ ॥ जाचकरि  
तीनिसिदिति ॥ नलागोनि ॥ ३ ॥  
थितीतुजलावे ॥ खरमुनीमिळो  
नि ॥ ह्मणहोनि ॥ गरखया आला  
सिसगुणी ॥ जय ० ॥ १ ॥ वेराग्यावेधो  
डावरिहोवोमिस्वार ॥ बोधेरखडगे  
उवीअसुरावेडुगीर ॥ वासनाफोडा ॥ नि  
गाकुनिउधळीभंडार ॥ घेघेघेघेध्वनि  
उठलीवोंकार ॥ जय ० ॥ २ ॥ तुयनिचि

(4)

गोपबन्धुवन्दन

सिद्धजाहलीमाहामारि ॥ निवृत्त  
तत्त्व असुरादळासि संहारी ॥ तुसि  
वस्ति अक्षयजाहली प्रेमपुरी ॥ स्व  
तसिद्धमाणिक्यदया अंतरी ॥ जय  
दे ॥ ३ ॥

॥ जयदेव जयदेव ॥ पार्वतिरमणा  
हरपार्वतिरमणा ॥ आरतीवोवाळु  
तुझियानिज ॥ जय ॥ ४ ॥ क



पुंरगोर भुजंगाभिरणा त्रिनयना ॥  
नेदीवाहना गंगा धरमर्दनमदना ॥  
शिवशिवशिव शिवसांवापातक  
संहारणा ॥ नीलकंठस्वामी हेपंचव  
दना ॥ जय ॥ १ ॥ रूढमाळागळास्म



(५)

शिवसुखसुखसुख

५

ज्ञानस्थळवासा ॥ त्रिपुरांतकविलव  
 प्रियवेराग्यवेशा ॥ मसळतोमरडमक  
 त्रिशुळकरिफरशा ॥ धारणभस्मनिवा  
 रणदुधरिभवपाशा ॥ जय ॥ २ ॥ निर्विका  
 रतिरेजननिर्गणतडाशिवा ॥ भालय  
 द्रदेवाहारहा ॥ ३ ॥ विविधताप  
 मिवारुनिवारि ॥ ४ ॥ गणिकदा  
 सजारणतुजयेक ॥ ५ ॥ जय ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥  
 ॥ जयदेवजयदेवतयजयरेषुके ॥ तु  
 सेतुळणेहरिहरब्रह्मानतुके ॥ ज  
 य ॥ ७ ॥ ८ ॥ चैतन्याचेस्फुर्णआदिमा  
 हामाया ॥ तुसा अंतनकळेमातेशि  
 वज्याया ॥ रचसीब्रह्मांडासिघालुनि  
 यापाया ॥ तुसिचरुपातुजलातुल



The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan  
 "Jyotir"

गोविंदाय नमः ५ (६)

घोतिजाया ॥ जय ० ॥ १ ॥ भक्तगती तु  
जलामाहु रयेमाई ॥ धां वल्लभ गती तु  
ऊजापुरचेतुकाई ॥ सप्तशृंगचंद्र  
लापरमेश्वरबाई ॥ अगणितनाम  
तुसे अंतनसेकाई ॥ जय ० ॥ २ ॥ जे  
जेवस्तुदिसे ॥ १ ॥ तुसेवी  
णरिका मा ॥ १ ॥ माणिक  
दासशरणत ॥ १ ॥ याभाव ॥ तुसि  
रूपाद्रिशीमंतकरतहाव ॥ जयदे  
व ० ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥  
जयदेव जयदेव जयपुंउलिकवरदा  
अव्यक्तव्यक्ताये ॥ निरक्षिसीदिन  
ब्रिद्रा ॥ जय ० ॥ ४ ॥ समपदकदिक



Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.  
"Teaching with a purpose"



(७) ~~७८~~ ~~७९~~ ~~८०~~  
 खेउनि भक्तास्तव उभा ॥ त्वं पदतल्प  
 दवारुनि असिपदच्या गाभा ॥ जय दे  
 व ॥ १ ॥ जागृती स्वप्न सुषुप्ती तु यति  
 कीद ॥ यावरि मूर्ति तु श्री स्वतः शि  
 धनीति ॥ जय ॥ २ ॥ पिंडु मला उ  
 विण पंढर पु  
 रवासी ॥ ठकी गवहानिजपा  
 यापासी ॥ ज ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥  
 ॥ जय देव जय ॥ ॥ अवधूता दूता  
 अवधूता ॥ आरुत वाळुतुजसहु  
 रूनाथा ॥ जय ॥ ५ ॥ स्वछंदे व्यवहा  
 री आनेदभरिता ॥ कायामायातीता  
 अनुसयासूता ॥ जय ॥ ६ ॥ रजतम  
 सत्वाविरहित दत्तात्रयनाम ॥ नामा  
 कामातीता चैतन्यधाम ॥ जय ॥ ७ ॥



The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Peshwarao Chavan Pratishthan, Nashik.

नानावेशधारीसर्वांतरयामी॥अन  
न्यभावेशारणदिनमाणिकनामी॥ज  
यदेव०॥३॥ ॥९॥

जयदेवजयदेवजयजयगुरुराया॥  
जयजयगुरुराया॥जय०॥



नामंअलारदतुविश्रीगुरुर  
शिष्यजहिलातय॥१॥कार्य  
माणिकनामभजनानिवाल॥कार

णश्रीगुरुनामउजळीलिय्योत॥ज  
यदेव०॥२॥ ॥१०॥

जयदेवजयदेवजयगुरुमाणिक  
सद्गुरुमा०तवपदमोक्षआह्वानस्म

गौतमसंस्कृत

७

(१)  
रुआणिका ॥ जय ० ॥ ६ ॥ कायावाने  
मनेशुद्धजेशरणतुसि ॥ वेवोनिम  
स्तकिहस्तकज्योतीमिळविसी ॥ मुमु  
क्षालामोक्षक्षणाधतुदेसी ॥ दाउनि  
च्यारीदेहेब्रह्मणविसी ॥ जयदे  
व ० ॥ १ ॥ देखा हीयोगीमुगुद  
मणी ॥ कर्मशुभकरिसेहेतुनी  
हीमनी ॥ गजगारेरुपाहासीस  
मदोनी ॥ नवसंसाधुअसेपरियोगि  
त्वासिउणी ॥ जय ० ॥ २ ॥ परोपकारी  
अससीवर्णुकायकिती ॥ आकलिप  
तालुदेसीकरुमीकायस्कती ॥ वर्णा  
वेगुरुमहिमाशेषानाहीमती ॥ जग  
तारायाआलासीअंशत्रयमूर्ती ॥



१०)

७ शंकराचार्य

जय० ॥३॥ सुरवर इच्छिति दरशण  
घेउ आत्मियासी ॥ देवा दिकास अप्रा  
प्त प्राप्तु आत्म्यासी ॥ पडता चरणमी  
मुक्त होई निल्लणे कासी ॥ सुकृत बहु ज  
न्माचे नर सिद्ध पासी ॥ ज० ॥ ५ ॥ ॥ ११

॥ ॥ अतः शंकराचार्यः ॥

॥ उत्तमसभिरुत्तमसंस्कृताकरो

जिरे ॥ ॐ वेदगंधर्वासव्युत्ता

साजिरे ॥ पुछवस्तुनि मुरडघालुनि

स्थापंत भागकिला ॥ च्याळकापुरा

त भीमयापरिने देखिला ॥ १ ॥ दधि

मधुपयाब्धीशुकरनिस्नानघावले

शिधोदकअणोनि भक्तभीमअंगधूत

(41)

गोपिकावली

ले ॥ सुवर्णयज्ञोपवितपीतांबरजरी  
 चानेसला ॥ च्याळकापु ॥ २ ॥ किरि  
 टसगटमुगुटवेविलासेमस्तकावरी  
 कुंडलाचेतेजेसळकेकरणीदोनिदोप  
 री ॥ भाळिकस्त... सुगेधगधरे  
 खिला ॥ च्या... ३ ॥ कडेतोडेहि  
 रेखडेआंगो... ट्रेका ॥ सारखळ्या  
 नेनेपुरा... पादका ॥ रत्नख  
 वितकटिदा... सुनबांधिला  
 च्याळकापु ॥ ४ ॥ दुलडिनउलडिल  
 डिनशोभतीगळा ॥ पुतळिमाळबोर  
 माळचंद्रहारवेगळा ॥ पदकसरी  
 नानापरीयानेकंठसाकला ॥ च्याळ  
 कापुरात ॥ ५ ॥ पुष्पवाहेजाईगुई



(12)

८

बकुलआणिशोवती ॥-चंपकादिपा  
रिज्यातश्वेतकमलमालती ॥धूपदी  
पनैवद्यादिभक्षभोज्यअर्पिला ॥-च्या  
ळकापु ० ॥ ६ ॥ आरतिकरियेउनिदुरि  
भक्तउभेठाकित्ती ॥बोवाळितातिप्रेम  
कडोनिगुणनिधानगारती ॥नोवते  
नगारेसौगंधकांदला ॥-च्या  
ळकापु ० ॥ ७ ॥ आरुनीवावार  
निघतवाहट ॥पालखीतव  
सोनिमूर्तिभक्तगजनाकरी ॥माणिक  
दासयाभिमासनेत्रिरूपदेखिला ॥  
च्याळकापु ० ॥ ८ ॥

गुणातीतनिगुणानिरंजनातुसडुरु  
अखंडाअद्वैतआनंदेश्वरादिगोबरु



(13)

निराकार निष्कलंक शुद्ध सत्वजाणि  
क ॥ देहन के रूप न के नाम न के माणि  
क ॥ १ ॥ वैश्य न के शूद्र न के क्षत्रिन के  
ब्राह्मण ॥ याति न के ज्याति न के न के मनु  
ष्य पण ॥ अं इजे न के जारजे न के दजे न  
आणिक ॥ देहन के न के नाम न के  
माणिक ॥ २ ॥ त रूण न के न  
के सितु बाजव न के पुरुष न के  
न के सितु पुस न के चतुर न के  
मूढ न के अ भिक ॥ देहन के ॥ ३ ॥ स्थु  
ल न के सूक्ष्म न के न के माहाकारण  
इंद्रियादितल न के न के सितु त्रिगुण ॥  
अवस्थान भोग न के न के सितु भूति  
क ॥ देहन के रू ॥ ४ ॥ ब्रह्मान के वि

(14)

९

एगुनहेरुद्रनहेमासुत ॥ इद्रनहे  
चंद्रनहेसूर्यनहेदैवत ॥ रामनहे  
कृष्णनहेनहेसिअवतारिक ॥ दे  
हनहेरुपन ॥ ५ ॥ मायानहेतुर्या  
नहेउन्मनिव्यावगळ ॥ शुभ्रनहेता  
मूनहेनीलनहेरुपन ॥ रंगनहे  
संगनहेभैरवभक्तिक ॥ देहनहे  
रुपन ॥ ६ ॥ पितृहीनअरवडम  
हेचंचळ ॥ धीरुहीनस्थीरनहेप  
रिआचळ ॥ नहेनहेनहेनहेनहेसि  
तुमाईका ॥ देह ॥ ७ ॥ नहेहायदोनिजा  
यकोणकायवर्णिती ॥ वेदहीनशास्त्रही  
नशोषहीनरेमती ॥ नसोनियाअससी  
पाहासर्वस्थीजीव्यापका ॥ देह ॥ ८ ॥ ७

(15)

१०

॥ भजनगुरुवाराचे प्रारंभः ॥

॥ पद ॥ ॥ गणराजपाई मनजउ

जउजउ ॥ ६ ॥ येकदंतगजवदनविरा

जित ॥ मोदकभक्षिसिभउभउभउ ॥ ग

ण ॥ १ ॥ वेदमुजीगोशंदरचेवित ॥

मूषकचालवी ॥ २ ॥ गण ॥ २ ॥

पीतांबरजरी ॥ ३ ॥ फर

शांकुशाकरीर ॥ ४ ॥ गण ॥ ३ ॥

माणिकहण ॥ ५ ॥ कयासी ॥ वा

चेबोलवीघडघडघड ॥ गण ॥ ४ ॥ ॥ १

॥ पद ॥ ॥ धरियलगेमाये श्रीगु

रुचेपाये ॥ मीपणजेथेसमुळगेले

तुपणकेचेकाय ॥ ६ ॥ कार्याकारण

भावोहेहिजारुलावावो ॥ त्रिपदमाहा



(16)

१०

वाक्ययात्राकरिता अनुभावो ॥ धरि  
य ० ॥ १ ॥ शबलद्वयगले । शुद्धपणआ  
ले ॥ असिपदतेहिंयेथेसमुळमिथ्या  
जाहले ॥ २ ॥ सर्वात्मकयेकसद्गुरुपा  
यदेख ॥ माणिकल्लणे गुरुशिष्याचा  
नसेथाकाध ॥ १ ॥ ॥ २ ॥  
॥ पदा ॥ ॥ जिवस्मचिके  
ले ॥ उडयोनि भाव । गु ० ॥ ५ ॥  
जागृतीस्वप्न सिनारुनि ॥ तु  
याचेदाविलेठावा ॥ गु ० ॥ १ ॥ जिवशि  
वपणहेभ्रांतीसिनिरसुनि ॥ द्वैताकी  
णस्वय ॥ गु ० ॥ २ ॥ माणिकल्लणे  
पूर्णब्रह्ममीयकचि ॥ मीपणमजठाई  
वाकासुर ० ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥



(12)

११

॥ पद ॥ ॥ गुरुवीगशरणनाहो  
दनेस्वयमेवब्रह्मनाआदने ॥ नमागु  
॥ ध ॥ मरतीदनेनमानाननगे ॥ श्री  
गुरुतोरिदयनबळगे ॥ १ ॥ जिवशि  
यरडुवंदाइने ॥ जन्मगरणभांतीहो  
इते ॥ २ ॥ अरुनननबळगे ॥  
माणिकतुंय्या ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥  
॥ पद ॥ ॥ इ ॥ पळलिगुरुराया  
नोडनोडतकळपुला ॥ ५ ॥ तत्व  
मसीमाहावाक्यकेळी ॥ हारिहोइतु  
द्वैतदधळी ॥ ६ ॥ नानदेहेअंबोदुइतु  
मरउ ॥ निनेब्रह्मांततोरिदअरउ ॥ ७ ॥  
माणिकपेसरागिलोपा ॥ उळितुसच्चि  
दानेदस्वरूपा ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

(18)

११

॥पद॥ ॥गुरुजीनेबोलणखुटविले

॥४॥कोणमीपुसताचिमजमाजिम

जला॥त्वरितचिभेटविले॥१॥जिव

शिवपणहेद्वेताचिकडसणी॥जेक्या

तआठविले॥२॥माणिकगुरुजीनि

ब्रह्मांडभवतामात्रमाजिसाटवि

ले॥३॥

॥पद॥ ॥निबरसालेबर

साले॥सदुस्ताराणरिघाले॥४॥

तत्वमसीइतीवाक्य॥जेणेजिवशिव

सालेणेक्य॥१॥देहीअसतामुक्ती

हरलीजन्ममरणभांती॥२॥माणिक

घुणेजगसरले॥पूर्णब्रह्मयेकचिउर



Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Chavan Pratishthan, Maharashtra, India.





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com